भारत में ब्रिटिश आर्थिक नीति (1757-1857)

प्रलिम्स के लिये:

[प्लासी का युद्ध](), [1857 का विद्रोह](), [स्थायी बंदोबस्त](), [राजस्व खेती](), [रैयतवाड़ी व्यवस्था](), [महालवाड़ी व्यवस्था](), [दादाभाई नौरोजी](), RC दत्ता

मेन्स के लिये:

भारत के औपनिवेशिक शोषण के चरण और भारत पर इसका प्रभाव, ब्रिटिश शासन की प्रमुख आर्थिक नीतियाँ, ब्रिटिश शासन के दौरान भूमि राजस्व प्रणाली, भारत में ब्रिटिश शाही नीति के आर्थिक प्रभाव, ब्रिटिश साम्राज्यवाद की प्रमुख आर्थिक आलोचना

1757 से 1857 तक, भारत में **ब्रिटिश आर्थिक नीतियों ने ब्रिटिश साम्राज्य के हितों की सेवा** के लिये **देश की अर्थव्यवस्था को काफी हद तक बदल दिया**। यह अवधि **1757 में प्लासी का युद्ध के बाद ब्रिटिश नियंत्रण के साथ शुरू हुई और औपनिवेशिक शासन के खिलाफ 1857 के पहले बड़े भारतीय विद्रोह** के साथ समाप्त हुई। इन वर्षों के दौरान ब्रिटिश नीतियों ने भारत की कृषि, उद्योग और व्यापार को ऐसे तरीकों से बदल दिया जिससे साम्राज्य को लाभ हुआ।

भारत के औपनिवेशिक शोषण के विभिन्न चरण क्या थे?

- **व्यापारिक चरण (1757-1813):**
  - इस चरण में औपनिवेशिक शासन द्वारा भारतीयों का **प्रत्यक्ष शोषण किया गया**, जिसमें **अधिशेष भारतीय राजस्व का उपयोग भारतीय तैयार माल खरीदने के लिये किया गया,** जिसे **इंग्लैंड में निर्यात किया गया।**
  - इस चरण में **भारत से धन का एक महत्वपूर्ण पलायन** हुआ, जो **ब्रिटेन की राष्ट्रीय आय का 2-3% था,** जिसने ब्रिटेन की औद्योगिक क्रांति को वित्तपोषित करने में मदद की।
  - वर्ष 1765 में बंगाल, बिहार और उड़ीसा पर दीवानी अधिकार हासिल करने के बाद, [ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी]() **ने कृषि कराधान के माध्यम से राजस्व को अधिकतम करने** पर ध्यान केंद्रित किया, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न **भूमि राजस्व प्रयोग हुए**।
- **व्यापारिक पूंजीवाद चरण (1813 से 1858):**
  - इस चरण को **मुक्त व्यापार का** [उपनिवेशवाद]() भी कहा जाता है। इसकी शुरुआत [1813 के चार्टर एक्ट]() से हुई और यह 1860 के दशक तक जारी रहा। ईस्ट इंडिया कंपनी का **व्यापारिक एकाधिकार 1833 में समाप्त** हो गया था
  - **भारत को कच्चे माल के स्रोत** और **ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं के बाज़ार में बदल दिया गया, जिससे औद्योगीकरण में** गिरावट आई और **औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था का निर्माण हुआ।**
- **वित्तीय पूंजीवाद चरण (1858 से 1947):**
  - तीसरे चरण (1858 के बाद) में **भारत पर ब्रिटिश राज के सीधे नियंत्रण की स्थिति बनी** और **वित्तीय** [साम्राज्यवाद]() का उदय हुआ।
  - ब्रिटिश पूंजी को **बैंकों और निर्यात-आयात फर्मों के माध्यम से संगठित किया गया**, जिससे मौजूदा शोषण प्रवृत्तियों को मज़बूत किया गया।

1757-1857 के दौरान ब्रिटिश शासन की प्रमुख भूमि राजस्व नीतियाँ क्या थीं?

- **राजस्व खेती (1772):**
  - **परिचय:**
    - इसे **"इजारदारी प्रणाली (Ijaradari System)" के नाम से भी जाना जाता था।** यह राजस्व संग्रह प्रणाली **मुगल काल के दौरान उपयोग की गई थी** और बाद में भारत में अंग्रेज़ों द्वारा अपनाई गई।
    - इसे वर्ष 1772 में बंगाल के गवर्नर **वारेन हेस्टिंग्स द्वारा** पेश किया गया था।
    - इजारदारी प्रणाली में राजस्व संग्रहण का अधिकार सबसे ज़्यादा बोली लगाने वाले को नीलाम कर दिया जाता था।
  - **समस्याएँ:**
    - ब्रिटिश शासन के दौरान ठेकेदार अक्सर किसानों का शोषण करते थे, जिससे उन पर **अत्याचार और दरिद्रता** बढ़ती थी।
    - कई ठेकेदारों ने उच्च भुगतान का वादा किया था, लेकिन **बाद में वे भुगतान** नहीं किये गए।
    - **ठेके देने में भाई-भतीजावाद के** कारण सरकार को भारी नुकसान उठाना पड़ा। मनमाने ढंग से अधिक राजस्व मांग के कारण **किसानों को असफलता और विनाश का सामना** करना पड़ा।

- **स्थायी बंदोबस्त या ज़मींदारी प्रणाली (1793):**
  - **परिचय:**
    - इसे वर्ष **1793 में लॉर्ड कार्नवालिस द्वारा** स्थायी बंदोबस्त के माध्यम से लागू किया गया था, जिसमें वास्तविक कृषकों के लिये निश्चित लगान या अधिभोग अधिकार का कोई प्रावधान किये बिना **राज्य की** भूमि राजस्व की मांग को स्थायी रूप से तय कर दिया गया था।
    - भू-राजस्व किसानों से **मध्यस्थों द्वारा वसूला जाता था , जिन्हें जमींदार कहा** जाता है।
    - जमींदारों द्वारा एकत्रित **कुल भू-राजस्व में सरकार का हिस्सा 10/11 रखा** गया था तथा शेष हिस्सा जमींदारों को जाता था।
    - इस प्रणाली का उद्देश्य कृषि उत्पादन में सुधार लाने तथा **राज्य के लिये कर संग्रहण को सरल बनाने के लिये भूस्वामियों का एक ईमानदार वर्ग तैयार करना था।**
    - **यह पश्चिम बंगाल, बिहार, ओडिशा, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश** और **मध्य प्रदेश** में सबसे अधिक प्रचलित था।
    - करों में वृद्धि होने से काश्तकारों की **गरीबी बढ़ी, जिसके कारण कई ज़मींदारों को अपनी जमीनें** खोनी पड़ीं और मध्यस्थों का उदय हुआ**, जिससे किसानों की दुर्दशा और भी बदतर** हो गई।
  - **समस्याएँ:**
    - ज़मींदारी प्रणाली ने **असुरक्षित भूमि अधिकारों वाले कृषकों पर उच्च लगान लगाया,** जिससे उन्हें ऋण लेने के लिये बाध्य होना पड़ा तथा भुगतान न करने पर बेदखली का जोखिम उठाना पड़ा।
    - **ज़मींदारों को अत्यधिक राजस्व माँगों से जूझना पड़ता था**, जिसके कारण **चूक होने पर ज़मींदारी खोनी पड़ती थी।** उन्होंने भूमि सुधार में बहुत कम रुचि दिखाई तथा मुख्य रूप से किराया वसूली पर ध्यान केंद्रित किया।
    - यद्यपि खेती और बाज़ार की कीमतें बढ़ीं, लेकिन ज़मींदारी प्रणाली की **निश्चित प्रकृति के कारण कंपनी राजस्व मांग में वृद्धि नहीं कर सकी, जिससे उसके वित्तीय लाभ सीमित हो गए।**
- **रैयतवाड़ी व्यवस्था (1792):**
  - **परिचय:**
    - रैयतवाड़ी व्यवस्था **को मद्रास प्रेसीडेंसी** में **अलेक्जेंडर रीड (Alexander Read)** ने लागू किया था। इस व्यवस्था के तहत **किसानों से सीधे राजस्व वसूला जाता था और** उन्हें संपत्ति का मालिक बनाया जाता था।
    - इस व्यवस्था में **रैयत** कहलाने वाले **व्यक्तिगत कृषकों को अपनी भूमि की बिक्री, हस्तांतरण और पट्टे पर पूर्ण अधिकार** प्राप्त थे ।
    - जब तक किसान लगान का भुगतान करते रहेंगे, उन्हें उनकी भूमि से बेदखल नहीं किया जा सकेगा।
    - यह व्यवस्था **दक्षिण भारत के अधिकांश भागों में प्रचलित थी**, जिसे पहले में तमिलनाडु में शुरू किया गया और बाद में इसे महाराष्ट्र, बरार, पूर्वी पंजाब, कुर्ग और असम तक विस्तारित किया गया।
    - इसका लाभ यह हुआ कि मध्यस्थ **समाप्त हो गए**, जो अक्सर ग्रामीणों का शोषण करते थे।
  - **समस्याएँ:**
    - यद्यपि इससे **राज्य के राजस्व में वृद्धि हुई, लेकिन** मूल्यांकन अक्सर **त्रुटिपूर्ण होते थे, जिससे किसानों पर अत्यधिक बोझ पड़ता था** और भूस्वामियों के मध्यस्थों को समृद्ध होने का मौका मिलता था।
    - रैयतवाड़ी व्यवस्था ने **अधीनस्थ राजस्व अधिकारियों को महत्त्वपूर्ण शक्तियाँ प्रदान कीं,** जिनके गतिविधियों की अक्सर खराब निगरानी होती थी।
    - यह प्रणाली **महाजनों और साहूकारों से काफी प्रभावित थी,** जो किसानों को उनकी जमीन गिरवी रखने के बदले में ऋण प्रदान करते थे।
    - साहूकार अक्सर किसानों का शोषण करते थे और ऋण न चुका पाने की स्थिति में **उन्हें उनकी जमीन** से बेदखल कर देते थे।
- **महालवाड़ी समझौता (1822):**
  - **परिचय:**
    - वर्ष 1822 में अंग्रेज़ **होल्ट मैकेंजी ने बंगाल प्रेसीडेंसी के उत्तर पश्चिमी प्रांतों** में, मुख्य रूप से वर्तमान उत्तर प्रदेश में महालवाड़ी व्यवस्था **की** शुरुआत की।
    - इस व्यवस्था के अंतर्गत भू-राजस्व ज़मींदारों के माध्यम से नहीं बल्कि **पूरे गाँव की ओर से ग्राम प्रधान द्वारा किसानों** से वसूला जाता था।
    - गाँव को एक **बड़ी इकाई में संगठित किया गया जिसे "महल (Mahal)" कहा जाता था,** जिसे भूमि राजस्व भुगतान के लिये एक एकल इकाई के रूप में माना जाता था।
    - महालवाड़ी व्यवस्था के अंतर्गत राजस्व को स्थायी रूप से तय करने के बजाय **समय-समय पर संशोधित** किया जाना था।
    - इस व्यवस्था को लॉर्ड विलियम बेंटिक ने आगरा और अवध में **लोकप्रिय बनाया और बाद में इसे मध्य प्रदेश और पंजाब** तक विस्तारित किया गया।
  - **समस्याएँ:**
    - यह प्रणाली **गलत सर्वेक्षण मान्यताओं पर आधारित थी, जिससे हेरफेर और भ्रष्टाचार को** बढ़ावा मिला।
    - कंपनी अक्सर उत्पन्न राजस्व की तुलना में **राजस्व संग्रह पर अधिक खर्च** करती थी।

1757-1857 के दौरान ब्रिटिश शासन की प्रमुख आर्थिक नीतियाँ क्या थीं?

- **कृषि का व्यावसायीकरण:**
  - **वर्ष 1860 के बाद नये भूमि संबंधों और राजस्व प्रणाली** के उद्भव के कारण **गाँव के उपयोग के लिये उत्पादन से** बाज़ार **के लिये विस्तार** की ओर बदलाव आया।
  - किसान राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में **बिक्री के लिये नील और कपास** जैसी **विशेष नकदी फसलें** उगाते थे।

- उन्हें **भूमि राजस्व और ऋण चुकाने के लिये भी मज़बूर किया गया,** मध्यस्थों द्वारा उनका शोषण किया गया तथा वैश्विक कीमतों में उतार-चढ़ाव के कारण उन्हें आर्थिक अस्थिरता का सामना करना पड़ा।

- **रेलवे:**
  - **1853 में लॉर्ड डलहौजी** ने भारत में रेलवे का निर्माण शुरू करने का निर्णय लिया।
  - यद्यपि इसे आधुनिकीकरण के रूप में देखा गया, लेकिन यह मुख्य रूप से **आंतरिक बाज़ारों और कच्चे माल को विदेशी व्यापार** के लिये बंदरगाहों को शहरों से जोड़कर **ब्रिटिश औपनिवेशिक हितों की पूर्ति करता था**, न कि आंतरिक विकास के लिये।
  - रेलवे का **निर्माण ब्रिटिश पूंजी से किया गया था** और **निवेशकों को 5% रिटर्न की गारंटी दी गई थी, जिसका वित्तपोषण भारतीय राजस्व से किया गया था**।
  - **वर्ष 1844 में लॉर्ड हार्डिंग ने युद्ध के कुशल संचालन** और साम्राज्य की सुरक्षा के लिये रेलवे विकास का समर्थन किया, जिससे **ब्रिटिश सैन्य आवागमन में सुविधा हो सके**।
- **विऔद्योगीकरण:**
  - अंग्रेज़ों ने **उच्च शुल्क लगा दिए** जिससे **उनके बाज़ारों में भारतीय वस्तुओं की पहुँच सीमित हो गई**, जबकि [औद्योगिक क्रांति](#) ने भारत को सस्ते मशीन-निर्मित सामानों से भर दिया।
  - प्रतिस्पर्द्धात्मकता में इस **कमी के कारण कृषि भूमि पर दबाव बढ़ गया** और **औद्योगीकरण** में गिरावट आई।
  - **पहले हस्तशिल्प को समर्थन देने वाले स्वदेशी दरबारों के लुप्त होने** से महत्त्वपूर्ण **विऔद्योगीकरण हुआ,** जिसके परिणामस्वरूप [भारतीय हस्तशिल्प उद्योगों](#) में गिरावट आई, देश भर में व्यापक बेरोजगारी और गंभीर गरीबी फैल गई।

भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीति के आर्थिक प्रभाव क्या थे?

- **पारंपरिक अर्थव्यवस्था में व्यवधान:** ब्रिटिश नीतियों ने भारत की अर्थव्यवस्था को औपनिवेशिक प्रणाली में बदल दिया, पारंपरिक आर्थिक संरचनाओं को नष्ट कर दिया और भारतीयों को उनकी जीवन शैली से अलग कर दिया।
- **कारीगरों और शिल्पकारों का पतन: सस्ते ब्रिटिश सामानों से प्रतिस्पर्द्धा** के कारण भारतीय हस्तशिल्प में तेज़ी से गिरावट आई। **रेलवे ने ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँच बढ़ा दी,** जिससे गिरावट और बढ़ गई। **पारंपरिक संरक्षकों के खत्म होने से** स्थिति और खराब हो गई।
- **कृषकों की दरिद्रता:** भारी **भू-राजस्व मांगों के** कारण किसानों को गंभीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, जिससे वे **ज़मींदारों और भूस्वामियों पर निर्भर हो गए**, जो अक्सर उनका शोषण करते थे, जिससे कई किसान कर्ज में डूब जाते थे।
- **ज़मींदारों की बर्बादी व नई जमींदारी का उदय:** ब्रिटिश शासन के शुरुआती वर्षों में कई पारंपरिक जमींदारों को वित्तीय बर्बादी का सामना करना पड़ा। **राजस्व संग्रह अधिकारों की नीलामी** तथा **कठोर संग्रह कानूनों के लागू होने से भूमि का हस्तांतरण धनी वर्गों को** होने लगा, जिससे ज़मींदारों का एक **नया वर्ग बना** एवं **किसानों पर और अधिक बोझ पड़ा**।
- **कृषि में ठहराव: अत्यधिक भीड़भाड़, उच्च राजस्व मांग और जमींदारी** के कारण कृषि में ठहराव तथा गिरावट आई, जिससे पैदावार में काफी कमी आई एवं किसानों की स्थिति खराब हो गई।
- **आधुनिक उद्योगों का उदय: वस्त्र और कोयला खनन** जैसे बड़े पैमाने के उद्योग उभरे, लेकिन वे मुख्य रूप से ब्रिटिश पूंजी द्वारा नियंत्रित थे, **जिससे भारतीयों की भागीदारी सीमित हो गई** तथा स्थानीय औद्योगिक विकास में बाधा उत्पन्न हुई।
- **गरीबी और अकाल:** ब्रिटिश आर्थिक नीतियों के कारण भारत में व्यापक गरीबी फैल गई, 19वीं सदी के अंत में बार-बार अकाल पड़ने से खाद्यान्न की कमी बढ़ गई और आर्थिक पिछड़ापन गहरा गया।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद की प्रमुख आर्थिक आलोचनाएँ क्या थीं?

- **दादाभाई नौरोजी (1825-1917):**
  - [दादाभाई नौरोजी](#) **को "भारत के ग्रैंड ओल्ड मैन" के रूप** में भी जाना जाता था और उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] (1901)"* में ['ड्रेन थ्योरी'](#) प्रस्तुत किया था।
  - **उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि किस प्रकार ब्रिटिश शासन के परिणामस्वरूप भारत से ब्रिटेन को धन का** निरंतर और व्यवस्थित प्रवाह हुआ, जबकि इससे कोई पारस्परिक लाभ नहीं हुआ।
  - उन्होंने अनुमान लगाया कि **भारत का लगभग एक तिहाई राजस्व** वेतन, बचत, पेंशन, भारत में ब्रिटिश सैनिकों को भुगतान और ब्रिटिश कंपनियों के मुनाफे के रूप में ब्रिटेन को भेज दिया जाता था, जिससे देश का आर्थिक शोषण होता था।
- **रोमेश चंद्र दत्त (1848-1909):**
  - अपनी ***[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*** **(1901-03) में दत्त ने** भारत की अर्थव्यवस्था पर **ब्रिटिश नीतियों के विनाशकारी प्रभावों** का विस्तृत विश्लेषण किया, जिसमें विशेष रूप से **विऔद्योगीकरण और कृषि में गिरावट पर ध्यान केंद्रित किया गया।**
  - उन्होंने तर्क दिया कि ब्रिटिश **शोषणकारी कर नीतियों ने भारत के स्वदेशी उद्योगों को नष्ट कर दिया** और **दमनकारी भूमि राजस्व प्रणालियों ने** व्यापक गरीबी को जन्म दिया।
  - दत्त ने ब्रिटिश आर्थिक नीतियों के कारण **भारत के वस्त्र निर्माण उद्योग के विनाश** और **पारंपरिक हथकरघा बुनकरों के उत्पीड़न पर प्रकाश डाला।**
  - उन्होंने [रेलवे की शुरुआत](#) **की भी आलोचना की** और तर्क दिया कि इससे **आयातित वस्तुओं का प्रवाह बढ़ गया, जिससे भारत की संपत्ति और अधिक नष्ट हो गई।**
- **महादेव गोविंद रानाडे (1842-1901):**
  - [एमजी रानाडे](#) एक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री और समाज सुधारक थे, जिन्होंने भारत की अर्थव्यवस्था को **"निर्भर औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था"** के रूप में वर्णित किया था।
  - उन्होंने तर्क दिया कि ब्रिटिश आर्थिक नीतियों ने **भारत को कच्चे माल का आपूर्तिकर्त्ता और ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं का**

उपभोक्ता बना दिया, जिससे **स्थानीय उद्योग नष्ट** हो गये।
    - रानाडे ने भारतीय अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने के लिये **औद्योगीकरण और बुनियादी ढाँचे के विकास की आवश्यकता पर बल दिया।**
- **गोपाल कृष्ण गोखले (1866-1915):**
    - **[गोपाल कृष्ण गोखले](#) ने ब्रिटिश कर नीतियों की आलोचना करते हुए** कहा कि भारत में **उच्च कर का बोझ** देश की संपत्ति के सापेक्ष अनुपातहीन रूप से बड़ा था।
    - उन्होंने **अधिक न्यायसंगत [राजकोषीय प्रणाली](#)** का समर्थन किया तथा **सैन्य व्यय में कटौती की मांग की** ।
    - गोखले ने भारत की आर्थिक प्रगति में सहायता के लिये **शिक्षा और बुनियादी ढाँचे में निवेश** का भी आह्वान किया।
- **जी. सुब्रमण्यम अय्यर (1855-1916):**
    - वह आर्थिक राष्ट्रवाद के प्रबल समर्थक थे और **भारत की आर्थिक अधीनता में विदेशी व्यापार की भूमिका पर ध्यान केंद्रित करते थे** ।
    - अपनी पुस्तक '*[illegible]*' **में जी. सुब्रमण्यम अय्यर** ने तर्क दिया कि भारत का आर्थिक पिछड़ापन उसके पूर्व-औपनिवेशिक अतीत के बजाय **उपनिवेशीकरण का प्रत्यक्ष परिणाम** था।
    - अय्यर ने ब्रिटिश वाणिज्यिक हितों के आर्थिक प्रभुत्व का मुकाबला करने के लिये **स्वदेशी नवजात उद्योगों के संरक्षण का समर्थन किया।**
    - उन्होंने मानसून पर निर्भरता कम करने के लिये **गैर-कृषि आधारित उद्योगों की आवश्यकता पर बल दिया** और मध्यस्थों द्वारा **किसानों के शोषण की आलोचना** की।

निष्कर्ष:

ब्रिटिश आर्थिक नीतियों ने भारत को औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में बदल दिया, पारंपरिक प्रणालियों को खत्म कर दिया और स्थानीय उद्योगों को दबा दिया। भूमि राजस्व नीतियों ने किसानों पर बोझ डाला, जबकि विऔद्योगीकरण तथा शोषणकारी व्यापार प्रथाओं ने गरीबी को एवं गहरा कर दिया। भारत कच्चे माल के आपूर्तिकर्त्ता एवं ब्रिटिश सामानों के लिये बाज़ार बनकर रह गया। नौरोजी और दत्त जैसे विचारकों ने बड़े पैमाने पर धन के पलायन तथा आर्थिक अधीनता की आलोचना की। इस शोषण की विरासत ने भारत को स्वतंत्रता के बाद भी दीर्घकालिक चुनौतियों के साथ निर्धन बना दिया।

सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न (PYQs)

[illegible]

प्रश्न. स्वतंत्र भारत में भूमि सुधारों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है? (2019)

(A)हदबंदी कानून पारिवारिक जोत पर केंद्रित थे, न कि व्यक्तिगत जोत पर।
(B)भूमि सुधारों का प्रमुख उद्देश्य सभी भूमिहीनों को कृषि भूमि प्रदान करना था।
(C)इसके परिणामस्वरूप नकदी फसलों की खेती कृषि प्रमुख रूप बन गई।
(D)भूमि सुधारों ने हदबंदी सीमाओं को किसी भी प्रकार की छूट की अनुमति नहीं दी।

उत्तर: (B)

प्रश्न. निम्नलिखित में से कौन ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में रैयतवाड़ी बंदोबस्त के प्रारंभ किये जाने से संबद्ध था/थे? (2017)

1. लॉर्ड कॉर्नवालिस
2. अलेक्जेंडर रीड
3. थॉमस मुनरो

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग करके सही उत्तर चुनिये:

(A)केवल 1
(B)केवल 1 और 3
(C)केवल 2 और 3
(D)1, 2 और 3

उत्तर: (C)

[illegible]:

प्रश्न: औपनिवेशिक भारत अठारहवीं शताब्दी के मध्य से क्यों अकाल पड़ने में अचानक वृद्धि देखने को मिलती है? कारण बताइये। (2022)

प्रश्न: भारत में अठारहवीं शताब्दी के मध्य से स्वतंत्रता तक अंग्रेज़ों की आर्थिक नीतियों के विभिन्न पक्षों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिये। (2014)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/british-economic-policy-in-india-1757-1857